SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर नैतिक शिक्षा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

वासदेव साहू, एम.एड. प्रशिक्षार्थी, **पूजा साहू,** शोध निर्देशिका, शिक्षा संकाय
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कॉलोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
वासदेव साहू, एम.एड. प्रशिक्षार्थी
पूजा साहू, शोध निर्देशिका
E-mail : vasdevsahu455@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/03/2025
Revised on : 26/05/2025
Accepted on : 05/06/2025
Overall Similarity : 00% on 28/05/2025

शोध सार

यह अध्ययन दुर्ग जिले के पाटन तहसील क्षेत्र के अंतर्गत शासकीय एवं निजी स्कूल के माध्यमिक कक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक परिणामों को आकार देने में नैतिक शिक्षा की भूमिका का पता लगाता है। सरकारी और निजी दोनों स्कूलों के सातवीं कक्षा के 100 छात्रों से आंकड़ो का संकलन किया गया। नैतिक शिक्षा (पर्सनल वैल्यू स्केल) डॉ. मधुलिका वर्मा एवं डॉ. विन्देश्वरी बख्शी द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत उपकरण का उपयोग करके नैतिक क्षमता का आंकलन किया गया था, जबकि शैक्षणिक उपलब्धि छात्रों के पिछले वर्ष के वार्षिक परीक्षा परिणामों पर आधारित था। निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता हैं कि उच्च नैतिक शिक्षा वाले विद्यार्थी ही मजबूत शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं इसके अलावा, निजी स्कूल के विद्यार्थियों और शासकीय स्कूल के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा में कुछ खास अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन समग्र छात्र–छात्राओं की सफलता को बढ़ाने के लिए शैक्षिक प्रथाओं में नैतिक विकास को शामिल करने के महत्व पर जोर देता है।

मुख्य शब्द

विद्यार्थी, नैतिक विकास, छात्र–छात्रा, शैक्षिणिक.

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद जी ने अपनी पुस्तक ''शिक्षा'' में कहा है।

''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा हैं।''

ज्ञान मनुष्य में स्वभाव – सिद्ध है, कोई भी ज्ञान बाहर से नही आता सब अन्दर ही है। वास्तव में कभी किसी व्यक्ति ने दूसरों को ही नहीं सीखाया, हममें से

प्रत्येक को अपने आपको सीखना होता है। बाहर के गुरु तो केवल सुझाव या प्रेरणा देने वाले कारण मात्र होते हैं।

तुम किसी बालक का शिक्षा देने में उसी प्रकार असमर्थ हो, जैसे कि पौधे को बढ़ाने में, पौधा अपनी प्रकृति के अनुरूप आप ही बढ़ता है। बालक भी अपने आपको शिक्षित करता है, पर हाँ तुम उसे अपने ढंग से आगे बढ़ने में सहायता दे सकते हो।

समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्दर में व्यवस्थित हैं, उसे केवल जागृत – केवल प्रबोधन की आवश्यकता है और बस इतना ही कर्म शिक्षक का है। हमें केवल इतना ही करना है कि वे बच्चे अपने ज्ञानेन्द्रिय के उचित प्रयोग के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीखे।''

शिक्षा शब्द का तात्पर्य, सीखना, जानना, अनुभव लेना अथवा ज्ञान प्राप्त करना होता है जिससे मनुष्य का विकास होता है और मनुष्य आगे में समर्थ होता है। ऐसी स्थिति में विचारकों ने शिक्षा को एक क्रिया अथवा प्रक्रिया कहा जाता हो। जो भी समझ जावे शिक्षा लेना या देना वास्तव में मनुष्य की एक क्रिया– प्रक्रिया और उसका एक प्रयास है, अब हमें विद्वानों के विचारों पर भी ध्यान देना चाहिए जिससे यह बात स्पष्ट हो सके:

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण सर्वोत्तम विकास से है।''

महात्मा गाँधी

'शिक्षा से तात्पर्य अर्न्तनिहित शक्तियों तथा बाह्य जगत के मध्य समन्वय स्थापित करने से है।''

हरबर्ट स्पेंसर

शिक्षा किसी समाज में चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला– कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनो निरन्तर विकास करते है।

अतः अंत में यह कह सकते हैं कि शिक्षा अपने चारों ओर से सीखने की एक प्रक्रिया है। यह हमें किसी भी वस्तु को समझने, किसी भी समस्या से निपटने और पुरे जीवन भर विभिन्न आयामों में संतुलन आयामों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। शिक्षा सभी मनुष्यों का सबसे पहला और सबसे आवश्यक अधिकार है। बिना शिक्षा के हम अधुरे है और हमारा सारा जीवन बेकार है। शिक्षा हमें अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे ज्ञान, कुशलता, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व में सुधार करती है। यह हमारे जीवन में दुसरों से बात करने की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाती है। शिक्षा परिपक्वता लाती है और समाज के बदलते परिवेश में रहना सिखाती है। यह सामाजिक विकास, आर्थिक वृद्धि और तकनीकी उन्नति की रास्ता है।

निर्देशन का अर्थ (आशय)

मनुष्य एक सामाजिक, बुद्धिमान और विवेकशील प्राणी है। इसी के आधार पर वह संसार के अन्य प्राणियों से बिल्कुल भिन्न है। वह बुद्धि के बल पर ही समाज के पर्यावरण और अन्य प्राणियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है जिसके लिए उसे अपने से बड़ो का सहयोग लेना पड़ता है। इस सहयोग के आधार पर वह समस्याओं के सम्बन्ध में उचित निष्कर्ष निकालने में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में उसे आसानी होती है। निर्देशन के आधार पर ही व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं और कौशलों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है और अपने में निहित क्षमताओं का उचित प्रयोग करके अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है बल्कि इसके आधार पर व्यक्ति की क्षमताओं का उसे बोध कराकर उसे इस योग्य बनाना होता है जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम हो जाए। निर्देशन की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है, परन्तु फिर भी कुछ

परिभाषाएँ अग्रलिखित है जिससे इसके आशय को समझा जा सकता हैः

कार्टर वी. गुड ने शिक्षा के शब्दकोश 1959 में निर्देशन की परिभाषा निम्नलिखित शब्द में दी हैः "निर्देशन गतिशील पारस्परिक सम्बन्धों की प्रक्रिया है जो व्यक्ति के दृष्टिकोणों और व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए डिजाइन की जाती है।"

शिक्षा में निर्देशन

शिक्षा के निर्देशन का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक, व्यावसायिक तथा वैयक्तिक.सामाजिक ज़रूरतों के अनुरूप मार्गदर्शन देना है ताकि वे सूचित निर्णय लेकर अपनी पूर्ण क्षमता विकसित कर सकें। यह प्रक्रिया न केवल शैक्षणिक.उपलब्धि और करियर.तैयारी में सहायक होती है, बल्कि मानसिक.सामाजिक कल्याण और आत्म.नियमन कौशल भी सुदृढ़ करती है।

- **शैक्षिक निर्देशनः** सही विषय–पाठ्यक्रम चयन, अध्ययन–रणनीति, परीक्षा–तैयारी और सीखने की बाधाओं का समाधान।
- **व्यावसायिक निर्देशनः** रुचि–योग्यता आंकलन, उद्योग–सूचना, इंटर्नशिप/प्रशिक्षण के अवसर और करियर–पथ निर्धारण।
- **व्यक्तिगत–सामाजिक निर्देशनः** आत्म–पहचान, भावनात्मक–समायोजन, सहानुभूति, संघर्ष–प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य सहायता।

अध्ययन की आवश्यकता

नैतिक शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्संबन्ध पर अध्ययन आवश्यक है, क्योंकिः

1. मूल्य–आधारित अधिगम छात्रों के व्यवहार और कक्षा–अनुशासन को प्रभावित करता है, पर इसकी प्रत्यक्ष भूमिका अकादमिक परिणामों में कितनी है, यह स्पष्ट संख्यात्मक साक्ष्य अभी सीमित है।
2. लिंग, क्षेत्र (ग्रामीण–शहरी) और सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर नैतिक कार्यक्रमों के प्रभाव में अंतर दिखाई देता है। इन भिन्नताओं को मापना नीति.निर्माताओं को लक्षित हस्तक्षेप तय करने में मदद करेगा।
3. भारत में नई शिक्षा नीति 2020 ने "मूल्य–सम्पन्न शिक्षा" को मुख्य धारा में रखा है, इसलिए विद्यालय स्तर पर इसके प्रभाव आंकलन हेतु ताज़ा डेटा की ज़रूरत है।
4. दुनिया–भर के शोध दिखाते हैं कि उच्च नैतिक मानदंड वाले वातावरण में विद्यार्थियों की आत्म नियंत्रण व सीखने की अभिप्रेरणा बढ़ती है, पर भारतीय संदर्भ में दीर्घकालिक (longitudinal) अध्ययन दुर्लभ हैं।
5. मौलिक अनुसंधान से तैयार विश्वसनीय प्रश्नावली और मानक–सांख्यिकीय मॉडल भावी शोधकर्ताओं के लिए आधार बनेगा।
6. ऐसे अध्ययनों के निष्कर्ष विद्यालय प्रशासकों को पाठ्यचर्या, सहशैक्षिक गतिविधियों व शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पुर्नरचना करने में तथ्य–आधार प्रदान करेंगे–जिससे नैतिक विकास और अकादमिक उत्कृष्टता, दोनों का एकीकृत लक्ष्य सम्भव हो सके।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

पूर्व में किए गए शोध कार्य निम्नलिखित हैः

भारत में किए गए शोधकार्य

1. गुप्ता, अर्चना (2011) ने "नैतिक शिक्षा और शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य संबंध का विश्लेषण" विषय पर शोध किया। उन्होंने लखनऊ नगर के 100 छात्रों पर अध्ययन कर यह पाया कि जिन छात्रों को नियमित रूप से नैतिक कहानियाँ, प्रार्थना सभाओं एवं अनुशासनात्मक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला, उनके परीक्षाफल अपेक्षाकृत बेहतर थे।

2. राय, विकास (2012) ने "विद्यालयी परिवेश में नैतिक शिक्षा के घटक और छात्रों की उपलब्धि" पर अध्ययन किया। यह शोध बिहार के 20 विद्यालयों में किया गया था। निष्कर्ष में कहा गया कि नैतिक शिक्षा से छात्रों में आत्मनियंत्रण, जिम्मेदारी एवं अनुशासन में सुधार आता है, जिससे उनकी अकादमिक उपलब्धियाँ भी बढ़ती हैं।
3. जोशी, नम्रता (2014) ने "नैतिक मूल्यों का किशोर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव" पर दिल्ली विश्वविद्यालय से शोध किया। उन्होंने पाया कि उच्च नैतिक मूल्यों वाले छात्र परीक्षा, प्रस्तुति व सह–पाठ्य गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अध्ययन में यह भी सिद्ध हुआ कि नैतिक मूल्यों की कमी छात्रों को अकादमिक तथा सामाजिक रूप से पिछड़ा बनाती है।
4. गोस्वामी, अशोक (2013) ने ''माध्यमिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा की भूमिकाः एक अध्ययन'' पर राजस्थान विश्वविद्यालय से शोध किया। अध्ययन में 500 छात्रों की राय ली गई और निष्कर्ष निकाला गया कि नैतिक शिक्षा उन्हें केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि जीवन कौशल से भी सुसज्जित करती है।
5. वर्मा, ज्योति (2015) ने ''नैतिक मूल्यों का शैक्षिक प्रदर्शन पर तुलनात्मक अध्ययन (सहशिक्षा बनाम एकल शिक्षा)'' विषय पर शोध कार्य किया। शोध में यह पाया गया कि सह–शिक्षा वाले विद्यालयों में छात्रों की नैतिक समझ और प्रदर्शन दोनों उच्च होते हैं, क्योंकि वे सामाजिक व्यवहार का अधिक सामना करते हैं।

विदेश में किए गए शोधकार्य

1. पियाजे, जीन (1932) ने ''मोरल जजमेंट ऑफ़ द चाइल्ड'' विषय पर शोध किया, जिसमें उन्होंने बच्चों के नैतिक विकास को आत्म–केंद्रितता से सामाजिक नियमों की समझ तक विस्तृत किया। उनके अनुसार बच्चे धीरे–धीरे नैतिक नियमों को समझते हैं और उनका पालन करना सीखते हैं। उनके इस शोध कार्य का प्रभाव शिक्षा मनोविज्ञान एवं नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण पर पड़ा।
2. गिलिगन, कैरल (1982) ने ''इन ए डिफरेंट वॉइस'' नामक शोध में स्त्रियों में नैतिकता के विकास की प्रक्रिया को पुरुषों से भिन्न बताया। उन्होंने यह बताया कि महिलाएं नैतिक निर्णय अधिक सहानुभूति एवं देखभाल के आधार पर लेती हैं। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि नैतिक शिक्षा में लिंग–विशेष रणनीतियों की आवश्यकता है।
3. रेस्ट, जेम्स आर. (1986) ने "Defining Issues Test (DIT)" के माध्यम से नैतिक विकास को मापने का एक साधन प्रदान किया। उनके शोध से यह स्पष्ट हुआ कि नैतिकता और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच सकारात्मक संबंध है। छात्रों की नैतिक समझ जितनी अधिक होती है, उनकी शैक्षिक निर्णय क्षमता उतनी ही बेहतर होती है।
4. लोके, जॉन (1693) ने "Some Thoughts Concerning Education" में नैतिक शिक्षा को बाल्यावस्था से ही अनिवार्य माना। उन्होंने नैतिक चरित्र निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य बताया। उनके विचारों ने पश्चातवर्ती शोधों को गहराई से प्रभावित किया।
5. कुह्न, डिएने (1991) ने ''अर्जुनमेंटेशन एंड रीज़निंग'' पर आधारित शोध कार्य में दिखाया कि नैतिक शिक्षा छात्रों की आलोचनात्मक सोच, निर्णय क्षमता और आत्म–नियंत्रण को बढ़ाती है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति में सुधार होता है।
6. बैंडुरा, अल्बर्ट (1977) ने ''सोशल लर्निंग थ्योरी'' के माध्यम से बताया कि बच्चे नैतिक मूल्यों को सामाजिक अनुकरण और व्यवहार के माध्यम से सीखते हैं। उनके शोध का निष्कर्ष यह था कि सकारात्मक नैतिक मॉडल शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए हैः

- शासकीय शाला में माध्यमिक स्तर के छात्रों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- शासकीय शाला में माध्यमिक स्तर के छात्राओ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

- निजी शाला में माध्यमिक स्तर के छात्रों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- निजी शाला में माध्यमिक स्तर के छात्राओ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है:

H_{01} माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{03} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन का क्षेत्र व परिसीमन

प्रतिभागियों का परिसीमन

इस शोध अध्ययन में केवल 100 विद्यार्थियों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) को शामिल किया जाएगा। अध्यापक, अभिभावक या अन्य शिक्षा से संबंधित व्यक्तियों को शामिल नहीं किया जाएगा।

क्रमांक	विद्यार्थी	शास. शाला	निजी शाला	योग
1	छात्र (बालक)	25	25	50
2	छात्रा (बालिक)	25	25	50
	कुल योग	50	50	100

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस कारण से अन्य विषयों अथवा विज्ञानों के समान ही शैक्षणिक अनुसंधान में प्रारंभिक अवस्था में ही किसी घटना विवरण तथा विषय के संबंध को स्पष्ट करने के लिए विशेष ध्यान केंद्रित किया जाता है। छात्रो, महाविद्यालय, प्रशासन पाठ्यक्रम, शिक्षा आदि किसी विषय के शिक्षण संबंधित समस्या के समाधान से पूर्व अन्वेषणात्मक की महत्त्वाकांक्षा में यह प्रश्न अवश्य आता है कि वर्तमान स्थितियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करनी हो। इसका मुल्यांकन उद्देश्य माना जाता है।

जनसंख्या

जनसंख्या शब्द का अर्थ देश में रहने वाले लोगों से लिया जाता है लेकिन सांख्यिकी व शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निर्धारण से होता है। जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (समस्या में निहित समूह) के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते है। सांख्यिकी में इस शब्द का प्रयोग उस पूरे क्षेत्र के लिए किया जाता है जिसका अन्वेषक ने अपने अनुसंधान के लिए लिया है। समग्र सीमित व असिमित हो सकते हैं। प्रस्तुत लघुशोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा कक्षा 7वीं के 100 विद्यार्थियों को सैपलिंग विधि द्वारा चुना गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श समग्र का वह भाग है, जिसे अनुसंधान के उद्देश्य से चुन लिया जाता है। इस न्यादर्श में समग्र की सभी विशेषताओं का होना अति आवश्यक है क्योंकि केवल अनुसंधान में समग्र के केवल इसी भाग का सर्वेक्षण किया जाता है तथा इसी सर्वेक्षण के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

न्यादर्श व्यक्तियों या वस्तुओं का वह समूह है, जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है तथा जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए निष्कर्ष निकाले जाते हैं। न्यादर्श सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का एक अंश मात्र नहीं होती, बल्कि न्यादर्श एक कला तथा विज्ञान है, जिसकी सहायता से उपयोग में लाए जाने वाले आंकड़ों की विश्वासनीयता एवं प्रसम्भाव्यता को नियंत्रित किया जा सकता है और उनका मापन भी किया जा सकता है। जब कभी किसी जनसंख्या (इकाईयों, वस्तुओं या मनुष्यों के समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है तो चुनने की इस क्रिया को न्यादर्शन (प्रतिचयन) कहते हैं तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श (प्रतिदर्श) कहते है।

''एक सांख्यिकीय प्रतिचयन अपने उस समस्त समूह अथवा पुंज का वह लघुपरि प्रतिचय होता है जिससे प्रतिचय का व्यपक किया जाता है।'' *ईटन व हिकिन्स*

प्रस्तुत शोध कार्य में न्याय हेतु चयनित दुर्ग जिले के चयनित शासकीय और निजी विद्यालय इस प्रकार हैं:

क्रमांक	चयनित विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	कुल
1.	विद्यादीप पब्लिक स्कूल, कुम्हारी, जिला–दुर्ग (छ.ग.)	25	25	50
2.	शासकीय माध्यमिक शाला परसदा, कुम्हारी, जिला–दुर्ग, (छ.ग.)	25	25	50
	कुल योग	50	50	100

उपकरण

1. नैतिक शिक्षा – प्रामाणिक उपकरण (डॉ. मधुलिका वर्मा एवं डॉ. विंदेश्वरी बख्शी) पर्सनल वैल्यू स्केल।
2. शैक्षणिक उपलब्धि – माध्यमिक कक्षा 6वीं वार्षिक परीक्षा प्राप्तांक।

संख्यिकीय विश्लेषण

मध्यमान (Mean) M = (Sum of all the observations/Total number of observations)

प्रमाप विचलन–S.D. = $\sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपात–CR = $\frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

सह–संबंध –

$$r = \frac{N\sum xy - \sum x \sum y}{\sqrt{[N\sum x^2 - (\sum x)^2][N\sum y^2 - (\sum y)^2]}}$$

परिकल्पना का प्रमापीकरण

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर नैतिक शिक्षा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन'' के उद्देश्य की पुष्टि हेतु परिकल्पनाओं की पुष्टि की जाती है जिसमें शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि संबंधी जानकारी हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है जिसके आधार पर प्राप्त प्रदत्तो का प्रतिशत निकाला गया है जिसे निम्न प्रकार के तालिका

के द्वारा स्पष्टीकरण किया गया है:

परिकल्पना क्रमांक H_{01}

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1: विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रातांकों का मध्यमान और सह–संबंध

क्रमांक	चर	संख्या	माध्य	सह–संबंध गुणांक	संबंध
1	नैतिक शिक्षा	50	30.052	0.192	धनात्मक
2	शैक्षणिक उपलब्धि	50	32.4		

Df=98, P< 0.05 सार्थक है।

आरेख क्रमांक 1: विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रातांकों का माध्यमान और सह–संबंध दर्शाने वाला आलेख।

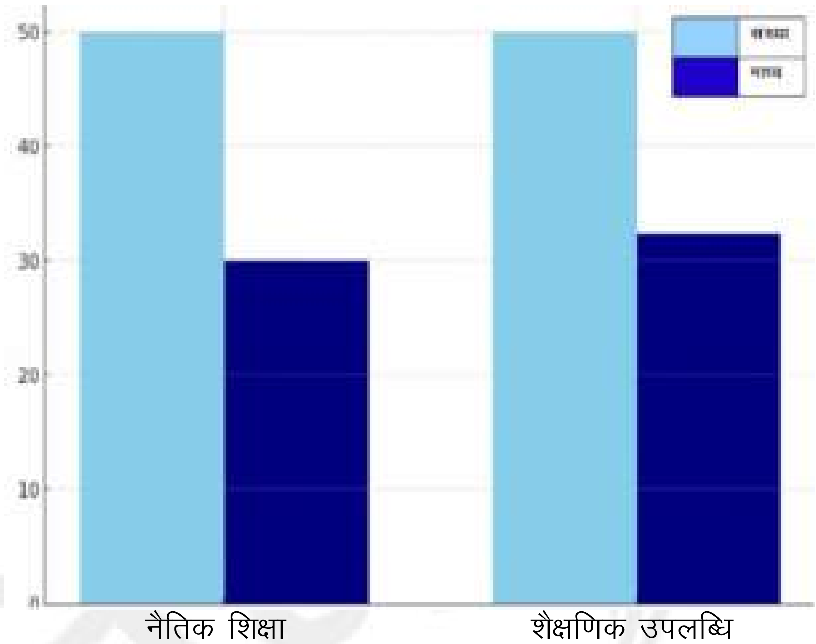

व्याख्या

सारणी क्रमांक 1.1 का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 7वीं विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा का माध्यमान 35.062 है व उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का मध्यमान 32.4 प्राप्त हुआ है। सह–संबंध की सार्थकता प्राप्त करने के लिए सह–संबंध गुणांक मान देखने पर 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है।

परिकल्पना क्रमांक H_{02}

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 2: शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के नैतिक शिक्षा का चर, संख्या, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

क्रमांक	चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थक/सार्थक नही
1	शासकीय स्कूल	50	40.7	5.81	2.67	सार्थक नही
2	निजी स्कूल	50	43.7	5.4		

आरेख क्रमांक 2: शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि और नैतिक शिक्षा के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का दण्ड आरेख।

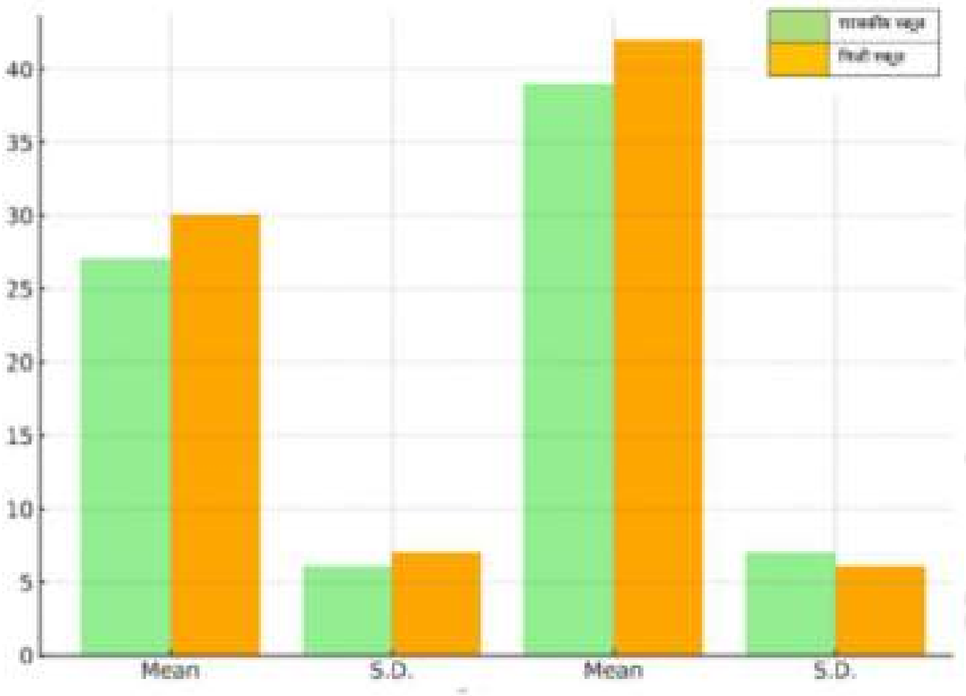

व्याख्या

शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल की विधार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं अभिवृत्ति में सार्थक अंतर के लिए t का मान 2.67 प्राप्त हुआ है जो कि स्तर पर t मूल्य का सारणी मूल्य 2.98 है जो कि हमारे द्वारा ज्ञात क्रांतिक मूल्य से अधिक है।

परिकल्पना क्रमांक H_{03}

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 3: शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का चर, संख्या, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी नीचे दी गई है

क्रमांक	चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थक/सार्थक नही
1	शासकीय स्कूल	50	19.6	5.66	1.33	सार्थक नही
2	निजी स्कूल	50	21	5.59		

आरेख क्रमांक 3: शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और नैतिक शिक्षा के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का दण्ड आरेख।

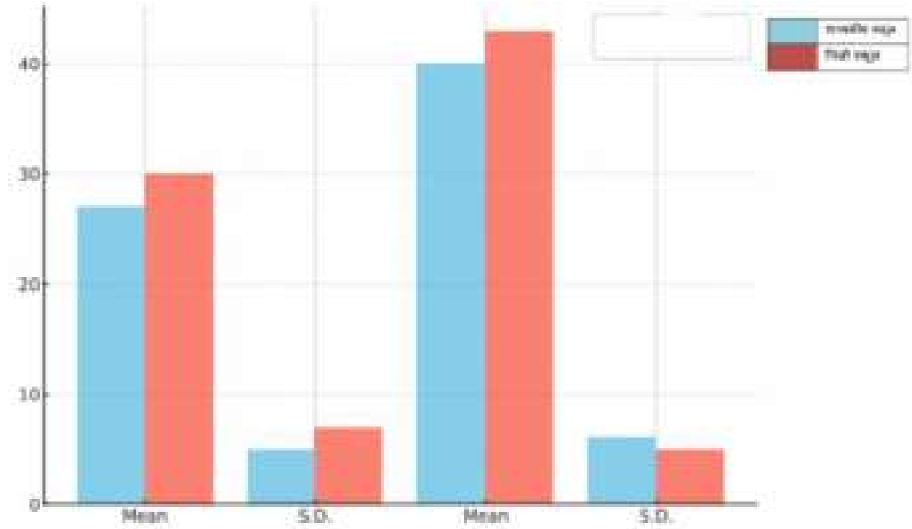

व्याख्या

शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर के लिए t का मान 1.33 प्राप्त है जो कि पर 0.05 स्तर पर t मूल्य का सारणी मूल्य 2.98 है जो कि हमारे द्वारा ज्ञात क्रांतिक मूल्य से अधिक है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

निष्कर्ष के माध्यम से नवीनतथ्य सामने आते हैं एवं समस्याओं के समाधान प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष अधोलिखित है:

परिकल्पना क्रमांक H_{01}

उपरोक्त शोध से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया। अतः यह परिकल्पना की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक H_{02}

उपरोक्त शोध से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक H_{03}

उपरोक्त शोध से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय स्कूल एवं निजी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

भावी शोध हेतु सुझाव

- नैतिक शिक्षा रुचियों के संदर्भ में अध्ययन एवं अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक विकास की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
- विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का समीक्षात्मक अध्ययन।
- विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं अभिवृत्तियों का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- स्मृति का विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. Bhatia, H.R. (2003) *A Textbook of Educational Psychology,* Macmillan Publishers India Limited, New Delhi.
2. बर्कोविट्ज़, एम. डब्ल्यू., और बियर, एम. सी. (2005) *What Works in Character Education: A Research&äiven Guide for Educators,* Character Education Partnership, Fairfax, VA.
3. Durkheim, E. (1961) *Moral Education: A Study in the Theory and Application of the Sociology of Education,* The Free Press of Glencoe, New York.
4. सिंह, पी. के. (2013) *नैतिक शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा का शैक्षणिक दृष्टिकोण,* Ramesh Book Depot, Meerut.
5. गिलिगन, सी. (1982) In a Dffierent Voice: Psychological Theory and Women's Development, Harvard University Press, Cambridge.
6. लिक्कोना, टी. (1991) *Educating for Character: How Our Schools Can Teach Respect and Responsibility,* Bantam Books, New York.
7. Kohlberg, Lawrence (1981) *The Philosophy of Moral Development: Moral Stages and the Idea of Justice,* Harper & Row, San Francisco.
8. Kundu, C.L. (2007) *Educational Psychology,* Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.
9. Mangale, S. K. (2012) *Advanced Educational Psychology,* (Second Edition) PHI Learning Pvt. Ltd., New Delhi.
10. Pandey, K.P. (2006) *Perspectives in Social Foundations of Education,* Amitash Prakashan, Ghaziabad.
11. Pathak, R.P. (2012) *Philosophical and Sociological Foundations of Education,* Pearson Education India, Chennai.
12. Piaget, J. (1932) *The Moral Judgment of the Child,* Routledge and Kegan Paul, London.
13. Rao, H.G. (2015) *भारतीय शिक्षा में नैतिक शिक्षा का स्थान,* National Publishing House, New Delhi.
14. Sharma, R. A. (2010) *Psychological Foundations of Education,* R. Lal Book Depot, Meerut.
15. नरवेज़, डी., और लैप्सली, डी. के. (2009) *Personality, Identity, and Character: Explorations in Moral Psychology,* Cambridge University Press, New Delhi.
16. नुक्की, एल. पी. (2001) *Education in the Moral Domain,* Cambridge University Press, New Delhi.
17. Vine, E. A.; and Ryan K. (1993) *Reclaiming Our Schools: A Handbook on Teaching Character, Academics, and Discipline,* Merrill Publishing Company, Chicago.
18. अग्रवाल, जे. सी. (2009) *Theory & Principles of Education,* (13th Edition), Vikas Publishing House, Noida.
19. Vygotsky, L. S. (1978) *Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes,* Harvard University Press, Cambridge.
20. Yadav, R.S. (2014) *शिक्षा में नैतिक मूल्यों का विकास,* R. Lal Book Depot, Meerut.

****